E-content for student of Patliputra University Patna,Bihar.

Course B.A Hons. Part-3

Subject-Hindi, Paper-8

Topic-**प्रेमचन्द-साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ।**

-डॉ० प्रफुल्ल कुमार,एसोसिएट प्रोफेसर,अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, आर०आर०एस०कालेज मोकामा ।पी०पी०यू० पटना।

आज की महिलाएं समुद्र की गहराई से लेकर आसमान की ऊंचाइयों तक अपनी पहुंच बना चुकी हैं।प्रेमचन्द की साहित्यिक कृतियों में वह नहीं मिलती है।उस समय महिला दिवस मनाते हुए समाज नहीं दिखाई देता हैऔर न सरकारी स्तर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान ही चलाया जा रहा था।आज देश में ढ़ाई हजार महिला वैज्ञानिकों की टीम तैयार हो रही है। फ्लाइट लेफ्टिनेंट अवनी चतुर्वेदी,भावना कंठ,लेफ्टिनेंट मोहना जीतरवाल जैसी नारियों का सपना प्रेमचन्द ने भले ही देखा हो पर उनसे साक्षात्कार नहीं हुआ होगा।नारी-शक्ति पुरस्कार से सम्मानित ऐसी नारियाँ तब नहीं थीं।अवार्ड प्राप्त 97वर्ष में 98%अंकों से चौथी कक्षा पास करने वाली कार्तियानी अम्मा,105वर्षीय चौथी कक्षा में 100%गणित में अंक प्राप्त करने वाली भागीरथीअम्मा,रश्मि उर्ध्वारिषि,निल्जा वांग्मो,वीणा देवी,भूदेवी,मान कौर,कलावती देवी,ताशी और नुंगशी मलिक जैसी प र्वतारोही ,वन-प्राकृतिक सम्पदा संरक्षिका लेडी टार्जन चामी मुर्मू भी नहीं थी। अगर कुछ था तो प्रेमचन्द के मन में ऐसी नारियों के अवतार लेने का बहुत बड़ा साकार होने वाला सपना था।

इसलिए ख्यात उपन्यासकार एवं कथासम्राट प्रेमचन्द का हिन्दी-साहित्य की दुनिया में प्रवेश करना कथावस्तु एवं चरित्र-चयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है। इनके साहित्य की नारी पात्रों में पूर्ववर्ती एवं परवर्ती समाज के पात्राओं के गुण-दोषों से भिन्न आचरण दिखाई देता है। इनके साहित्य में इन्होंने आर्थिक दृष्टि से भारतीय समाज में नारी को दो प्रमुख वर्गों में विभक्त करके देखा है।एक वर्ग सुखी-सम्पन्न, धन-धान्य से परिपूर्ण,सेठ,साहुकार,जमीन्दार, पंडित-ब्राह्मण,कायस्थ,राजपूतआदि उच्च वर्ग की नारियाँ।दूसरा गरीब, अभावग्रस्त,मजबूर, मजदूर,भूमिहीन, चमार गोंड,अनुसूचित जाति,जनजाति आदि निम्न जाति की,शोषित,पीड़ित, समाज की मुख्य धारा से वंचित वर्ग की नारियाँ।प्रेमचन्द ने अपने अधिकांश उपन्यासों एवं कहानियों में समाज के निम्न वर्ग की नारी पात्रों को सम्मान एवं सहानुभूति प्रदान किया है।गोदान में धनिया ,झुनिया,सिलिया हो या कर्मभूमि मे अमरकान्त की पत्नी,ईदगाह में हामिद की दादी अमीना,पूस की रात की-,दो बैलों की कथा की-,पंचपरमेश्वर की खाला, ठाकुर का कुआँ की गंगी, सद्गति कहानी की झूरिया,घासवाली कहानी की-।सबके साथ बात-चीत करते हुए कहानियों को अबाध रूप से अग्रसर होने देते हैं।नारी पात्रों की योग्यता के अनुरूप भाषा-शैली मेंअपनी अभिव्यक्ति को ऐसा प्रभावशाली बनाते हैं कि पाठक रचनाकार के साथ विश्वसनीय आत्मीय सम्बन्ध बना लेता है।इनके उपन्यासों एवं कहानियों की नारियाँ अपने समय की सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थितियों की परिचायक हैं।ये नारियाँ तात्कालिक भारतीय समाज की यथार्थ गाथाएँ कहती हैं।प्रेमचन्द ने स्वयं निम्नमध्यवर्गीय परिवार के अभावपूर्ण, संकटग्रस्त जीवन बनारस के लमही ग्राम में व्यतीत किया है।1880ई०से1936ई० तक के जीवन काल में उच्च जाति वर्ग में पैदा होकर भी मन और धन ही नहीं सर्वस्व जीवन होम करके साहित्यिक कृतियों द्वारा दलित,पीड़ित,शोषित, समाज की सेवा की है। इनके साहित्य में शोषितों,दलितों,प्रताड़ित,वंचित नारियों के प्रति गहरी,गंभीर,संवेदनाऐं चित्रित हैं। इनको विमाता का दुःख सहना पड़ा,अप्रिय वैवाहिक जीवन झेलना पड़ा है। विधवा विवाह के स्वयं गवाह है।गोदान में होरी महतो जाति का दलित किसान सपरिवार दिन-रात कड़ी मेहनत करता है । ऊपज का आधा भाग कर्जदाता दातादीन को चुकाता है और शेष आधे से परिवार का पालन-पोषण होता है।उसके परिवार में उसकी पत्नी धनिया,बेटा गोबर,बहू झूनिया,बेटी सोना-रूपा एक साथ रहते हैं। वह सामंतों-महाजनों के द्वारा किए जाने वाले दमन,शोषण के कारण अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश है। ऐसी स्थिति में

गोदान की दलित नारियाँ जैसे-तैसे उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश हो जाती हैं। प्रेमचंद -साहित्य में नारी जीवन का यथार्थ।होरी का पूरा परिवार जी तोड़ परिश्रम करने के बावजूद भी शोषण-दमन के कारण अभाव ग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है।होरी की आर्थिक स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जाती है।उसे अपनी तीन बीघा जमीन गिरवी रखना पड़ता है।बेटी माता-पिता की दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण बिकने के लिए विवश हो जाती है। होरी -धनिया का सपना था कि घर में गाय पालूँगा,वह सपना जीवन पर्यंत सपना ही रह गया। धनिया की कोशिश अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने की रहती है ।वह आशा और विश्वास के साथ पूरी लगन के साथ मेहनत करती है परन्तु सफलता प्राप्त नहीं होती है। धनिया की विवशता का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द ने लिखा है--"हीरा ने रोते हुए कहा-भाभी,दिल कड़ा करो,गो-दान करा दो,दादा चले।--और कई आवाजें आयीं-हाँ,गो-दान करा दो,अब यही समय है।धनिया यंत्र की भाँति उठी,आज जो सुतली बेची थी,उसके बीसआने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथ में ंरखकर सामने खड़े दातादीन से बोली---महाराज,घर में न गाय है,न बछिया,न पैसा।यही पैसे हैं,यही इनका गो-दान है।और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।"1-गोदान पृष्ठ 319,अनुपम प्रकाशन,पटना, 2003 ई०, इस प्रकार घनिया के माध्यम से प्रेमचन्द ने तात्कालिक स्त्री की अभावग्रस्त जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

प्रेमचन्द ने अपने अंदाज से तात्कालिक स्त्री जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन होते दिखलाया है।गो जोदान में धनिया सामाजिक स्तर पर क्रांतिकारी कदम उठाते हुए यादवों के घोर विरोध के बावजूद झूनिया को बहू स्वीकार करती है। इस प्रसंग में धनिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। धनिया मातादीन की मजदूरनी से रखैल बनी सिलिया को जबरदस्त संरक्षण प्रदान करती है। वह सिलिया को ब्राह्मण का दर्जा देने के बजाय मातादीन को ही चमार बनाने का अभियान छेड़ देती हैऔर सफलता भी प्राप्त करती है।प्रेमचन्द का दलित नारियों के प्रति सहानुभूति ऐसे ही प्रसंगों में द्रष्टव्य है।प्रेमचन्द ने धनिया के माध्यम से ब्राह्मण मातादीन को चमार बनाकर ही छोड़ा। यह क्रांति का स्वर अन्य नारी पात्राओं मेंभी देखा जा सकता है--"सिलिया की माँ-- वाह-वाह पण्डित खूब नियाव करते हो।तुम्हारी लड़की किसी चमार के साथ निकल गई होती और तुम इसी तरह की बातें करते तो देखती।हम चमार हैं, इसलिए हमारी कोई इज्जत ही नहीं।हम सिलिया को अकेले न ले जायेंगे, उसके साथ मातादीन को भी ले जायेंगे, जिसने उसकी इज्जत बिगाड़ी है।तुम बडे नेमी-धरमी हो।उसके साथ सोओगे; लेकिन उसके हाथ का पानी न पियोगे।"2--गोदान,पृष्ठ 221,अनुपम प्रकाशन पटना,2003ई०,

अपने कर्मभूमि उपन्यास में प्रेमचन्द ने सवर्ण अमरकांत को दलितों के साथ घुलमिलकर दलितों की समस्याओं का समाधान खोजने में व्यस्त दिखाया है और अमरकांत की पत्नी सुखदा को दलितों को मंदिरों में प्रवेश दिलाने के लिए आंदोलन चलाती हुई। उस दौर में सुखदा जैसी नारियों में सामाजिक कार्यकर्ता बनकर सामाजिक न्याय के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की कोशिश दिखाई देती है। तात्कालिक स्त्री जीवन में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति रुझान है। समाज में समानता लाने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से भारतीय नारियों में जागरूकता दिखाई देती है।

सम्भवतः मनुष्य ने जिस समय से सामाजिक जीवन जीना शुरू किया है उसकी समय से बडे -छोटे,ऊँच-नीच,अमीर -गरीब, बलशाली-कमजोर, समझदार-नासमझ का भेद-भाव समानान्तर गति से विकसित होता गया है।जो बड़े हैं,वे छोटे का शिकार करने की कोशिश करते रहते हैं। मानव-समाज के लिए यह कृत्य अशोभनीय निंदनीय,असामाजिक, अपराध है।इससे व्यक्ति या जाति विशेष को लाभ भले हो जाय,समाज या राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता है।भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक के लिए समानता का अधिकार प्रदान करता है।भारत एक गणतांत्रिक गणराज्य है।यहाँ के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा,आत्मसम्मान, आत्माभिव्यक्ति काअधिकार संविधान द्वारा प्रदत्त है।किसी भी भारतीय नागरिक को उसके मौलिक अधिकार से वंचित रखना या उसके ऐसेअधिकारों का हनन करना कानूनन जूर्म है।ऐसे अपराधियों के लिए दण्ड निर्धारित है।इन सारी व्यवस्थाओं के बावजूद भारतीय समाज में नारी जीवन की समस्याएँ बनी हुई हैं। दलित, पीड़ित, समाज की मुख्यधारा से वंचित,शोषित ,दबी-कुचली नारियों का एक ऐसा वर्ग जिसका सारा जीवन दो शाम की रोटी जुटाने में ही व्यतीत हो जाता है। इस संदर्भ में जाति,धर्म, संप्रदाय कोई भी आधार नही हो सकता है।गरीबी किसी को भी अपने आगोश में ले लेती है।भारत की आज़ादी के तुरंत बाद यह महसूस किया गया था कि-"आम जनता की घोर गरीबी का कारण यही है कि उसके पास उसकी अपनी कही जाने वाली कोई जमीन नहीं है।--- समाजवाद में समाज के सारे सदस्य बराबर होते हैं, न कोई नीचा और न कोई ऊंचा।"3(संवै भूमि गोपाल की)-बापू कथा,पृ०204 प्र०,सर्वसेवासंघ प्रकाशन वाराणसी-दिस.1969कांग्रेस ने दलित,शोषित,जातियों की समस्याओं के समाधान के लिए1919ई०में ही प्रस्ताव पास किया कि"परम्परा से दलित जातियों पर जो रूकावटें चली आ रही हैं,वे बहुत दुःख देने वाली हैंऔर क्षोभकारक है,जिससे दलित जातियों को बहुत कठिनाईयोंऔर असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।इसलिए न्याय और भलमनसी का यह तकाजा है कि ये तमाम बंदिशें उठा ली जायें।"4-बापू कथा, पृष्ठ-134, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-दिस-1969.दलित चिंतक चंद्रभानजी ने सामाजिक जीवन का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि "आजादी के

बाद बहुत कुछ बदला है, लेकिन जाति के पूर्वाग्रह नहीं बदले,जाति के नाम पर होने वाला दमन तो इन दिनों बढ़ता ही जा रहा है।5"हिन्दुस्तान, पटना, पृष्ठ-12, 3अगस्त२2018ई. भारत सरकार ने 1955में छूआछूत के विरुद्ध ,1989में अत्याचार के विरुद्ध, और 2015में कड़ा दलित एक्ट बनाया है।शायद प्रेमचन्द ने यह महसूस कर लिया था कि समाज का रूख बदलने वाला है।दबी-कुचली नारियाँअब आगे चलकर सामंती-शोषणऔर दबाव झेलने वाली नहीं हैं।इसी दूरदृष्टि का परिचय अपनी कहानियों सद्गति, कफन,पूस की रात,ठाकुर का कुआँ,जुर्माना,सवा सेर गेहूं दूध का दाम,घासवाली,मंदिर,मंत्र,गरीब की हाय,विध्वंस,आदि में दलित,वंचित, शोषित,पीड़ित नारी की उपेक्षा और उनके साथ हो रहेअन्याय,अत्याचार के साथ उनके जीवन-संघर्ष की यथार्थ अभिव्यक्ति से दी है।मुंशी प्रेमचन्द ने सद्गति कहानी में दिखाया है कि किस प्रकार दुखी चमार और झुरिया अपनी बिटिया की सगाई का साइत-सगुण विचारने के उद्देश्य से पंडित घासीराम कोअपने घर बुलाने का यत्न करते हैं।उनकी आदर-सत्कार के लिए पूरी व्यवस्था करते हैं। परन्तु दुखी भूखे-प्यासे बेगार करते हुए घासीराम के दरवाजे पर दम तोड़ देता है।दुखी चमार का शव उठाने से चिखुरी गोंड़ सबको मना कर दिया-"खबरदार,मुर्दा उठाने मत जाना।अभी पुलिस की तहकीकात होगी।दिल्लगी है कि एक गरीब की जान ले ली।पंडित जी होंगे तोअपने घर के होंगे।लाश उठाओगे तो तुम भी पकड़े जाओगे।7"मानसरोवर भाग-4,पृष्ठ-17 अनुपम प्रकाशन,पटना-4 सं०-2015ई०.

चमारों के असहयोग या कहें विरोध के परिणाम स्वरूप रातभर दुखी की लाश को लेकर पंडित की बस्ती में बेचैनी बनी रही। अंततः स्वयं पंड़ित घासीराम लाश को रस्सी से बाँधकर घसीटते हुए गाँव से बाहर खेत में छोड़ आया।प्रेमचन्द ने लिखा है-"पंडित जी ने रस्सी पकड़ कर लाश को घसीटना शुरू कियाऔर गाँव के बाहर घसीट ले गये।वहाँ से आकर तुरन्त स्नान किया,दुर्गा पाठ पढ़ाऔर घर में गंगा में गीदड़ और गिद्ध,कुत्ते और कौए नोच रहे थे।यही जीवन पर्यन्त की भक्ति,सेवाऔर निष्ठा का पुरस्कार था।"8 पृष्ठ18 मानसरोवर भाग 4,अनुपम प्रकाशन।प्रेमचन्द ने भारतीय कृषि संस्कृति के बहाने सम्पूर्ण भारतीय समाज के दलित वर्ग की नारियों की संघर्ष गाथा का विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया है।सामाजिक स्तर पर सामंती शोषण एवं जातिगत विद्वेष की गहरी नारियों की संवेदना इनकी रचनाओं में छलक पड़ती है।प्रेमचन्द स्वयं गरीब परिवार में जन्म लिये थे।गरीबी में पले हुए इस साहित्यकार ने यत्र-तत्रअपने साहित्य में गरीबों के प्रति सहानुभूति और जागरूकता अभिव्यक्त की है-"जिस समाज में गरीबों के लिए स्थान नहीं,वह उस घर की तरह है जिसकी बुनियाद न हो।कोई हल्का सा धक्का भी उसे जमीन पर गिरा सकता है।मैंअपने धनवानऔर विद्वान और सामर्थ्यवान भाइयों से पूछता हूँ,क्या यही न्याय है कि एक भाई तो बंगले में रहे,दूसरे को झोपड़ा भी नसीब न हो?क्या तुम्हें अपने ही जैसे मनुष्यों को इस दुर्दशा में देखकर शर्म नहींआती?------मानवता हमेशा कुचली नहीं जा सकती।समता जीवन का तत्व है।यही एक दशा है,जो समाज को स्थिर रख सकती है। थोड़े से धनवानों को हरगिज यहअधिकार नहीं हैकि वे जनता की ईश्वरदत्त वायुऔर प्रकाश का अपहरण करें।यह विशाल जनसमूह उसीअनधिकार,उसीअन्याय का रोषमय रुदन है।अगर धनवानों कीआँखेंअब भी नहीं खुलती, तो उन्हें पछताना पड़ेगा।यह जागृति का युग है।जागृति अन्याय को सहन नहीं कर सकती।जागे हुएआदमी के घर में चोरऔर डाकू की गति नहीं।"9 पृष्ठ- 242, कर्मभूमि,प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली-110002, सं०2006ई०.

भारत में अंग्रेजी शाषण-व्यवस्था में भी शुद्रों को भी सम्पत्ति रखने का कानून बनाया गया।न्याय-व्यवस्था मेंं सभी के लिए समान दंड का कानून बनाया गया।सरकारी सेवा में जाति-धर्म पर आधारित भेद-भाव मिटाने का काम किया गया ।शूद्रों को सार्वजनिक क्षेत्र में जाने का अधिकार दिया गया। सामाजिक कुरीतियों-कन्या-हत्या,दास-प्रथा,सती-प्रथा, नरबलि-प्रथा,देवदासी-प्रथा,चरक पूजा, बहूविवाह-प्रथा, बालविवाह,बेगार-प्रथा आदि की जंजीरों में जकड़ी हुई दलित-पिछड़ी नारियों की मुक्ति के प्रयास किए गए हैं। यह प्रयास स्वातंत्र्योत्तर भारत में और अधिक प्रबलता पूर्वक गतिमान हुआ।प्रेमचन्द भारतीय समाज को आदर्श स्वरूप देना चाहते थे। प्रेमचन्द की दृष्टि में समरसता और मानवता मिलकर विशिष्ट समाज का निर्माण करेगी तब भारत आदर्श राष्ट्र बनेगा। प्रेमचन्द समाज में यह बदलाव अचानक ही होते हुए नहीं दिखलाया है।भारतीय समाज में एक दिन,महीने या साल में बदलाव कभी हुआ भी नहीं है।इसलिए वे भारतीय नारियों के सतत संधर्ष दिखलाते हैं। उदाहरण है-"हल्कू ने आकर स्त्री से कहा-सहना आया है, लाओ, जो रुपये रखे हैं,उसे दे दूँ,किसी तरह गला तो छूटे। मुन्नी झाड़ू लगा रही थी।पीछे फिर कर बोली-तीन ही तो रुपये हैं; दे दोगे तो कम्मल कहाँ से आवेगा?माघ- पूस की रात हार में कैसे कटेगी।उससे कह दो,फसल पर रुपये दे देंगे।अभी नहीं।--न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती।मैं कहती हूँ,तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर काम करो,उपज हो तो --बाकी दे दो,चलो छुट्टी हुई।बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है।पेट के लिए मजूरी करो।ऐसी खेती से बाज आये।मैं रुपये न दूँगी-न दूँगी।"(10)ठाकुर का कुआँ कहानी का जोखू प्यासे तड़प रहा है,घर में पीने के लिए पानी नहीं है।पत्नी गंगी ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लाना चाहती है तो जोखू यह कहकर मना कर देता है कि"हाथ-पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा।बैठ चुपके से।ब्रम्ह-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे।गरीबोंं का दर्द कौन समझता है।हम तो मर भी जाते हैं,तो कोई दुवार पर झाँकने नहीं आता कंधा देना तो बड़ी बात है।ऐसे लोग पानी भरने देंगे"?(11)

प्रेमचन्द ने आगे लिखा है-"गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा-हम क्यों नीच हैंऔर यह लोग क्यों ऊँच हैं?इसलिए कि ये लोग गले में तागा ड़ाल लेते हैं?यहाँ तो जितने हैं,एक से एक छँटे हैं?चोरी ये करें,जाल-फरेब ये करें,झूठे मुकदमे ये करें।अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गडेरिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया।इन्हीं पंडित जी के घर में बारहो मासा जुआ होता है।यही साहूजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं।काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस बात में हैं हमसे ऊँचे।हाँ मुँह में हमसे ऊँचे हैं।"(12)इस प्रकार की विद्रोही भावनाओं से ओत-प्रोत कहानियों में कथासम्राट ने दलित समाज की नारियों की विवशता,आक्रोश और अपने अस्तित्व की रक्षा करने के प्रयास दिखाया है तो कहीं-कहीं विफलताओं की ओर लुढ़क जाने की लाचारी भी। गंगी जानपर खेल कर भी,सारे प्रयासों के वावजूद जोखू के लिए साफ पानी नहीं ला सकी।जोखू अंततः गंदा पानी से ही अपनी प्यास मिटाने के लिए विवश हो गया। इसके विपरीत'घासवाली'कहानी में प्रेमचन्द ने चमारिन मुगिया के रुप-माधूर्य से आकर्षित ठाकुर चैनसिंह का हृदय परिवर्तन कर दिया। प्रेमचन्द ने लिखा है-"चैनसिंह कोआज जीवन में ं एक नया अनुभव हुआ। नीची जाति में रुप-माधूर्य का इसके सिवा और काम ही क्या है कि वह ऊँची जाति वालों का खिलौना बने।ऐसे कितने ही मौके उसने जीते थे; पर आज मुलिया के चेहरे का रंग, उसका वह क्रोध, वह अभिमान देखकर उसके छक्के छूट गये।उसने लज्जित होकर उसका हाथ छोड़ दिया।मुलिया वेग से आगे बढ़ गई।"(13)(दूसरे दिन)-"चैनसिंह--तू चली गई तो मैं वहीं बैठ कर घंटों रोता रहा।जी में आता था हाथ काट लूँ ।कभी जी चाहता था जहर खा लूँ। अब जो सजा तेरे जी में आवे,दे दे।अगर तू मेरा सिर भी काट ले तो गर्दन न हिलाऊँगा। "(14) मोलिया-"क्या समझते हो कि महावीर चमार है तो उसकी देह में लहू नहीं है?--मुझसे दया माँगते हो, इसलिए न कि मैं चमारिन हूँ,नीच जाति हूँ और नीच जाति की औरत जरा सी घुड़की-धमकी वा जरा सी लालच से तुम्हारी मुट्ठी में आ जाएगी।कितना सस्ता सौदा है।ठाकुर हो न,ऐसा सस्ता सौदा क्यों छोड़ने लगे?"(15) और फिर चैन सिंह ने मुलिया की लाज निभाई।

सामाजिक परिवर्तन के साथ सभी वर्गों की स्थितियों में बदलाव आया है। साहित्यकार ने जिस दलित वर्ग की नारियों की समस्या का चित्रण किया है,उसका विवेचन उनके युग के आधार पर करना चाहिए।वह समय राजतंत्र,जमींदारी-व्यवस्था,जाति और धर्म पर आधारित विभक्त सामाजिक स्वरूप का था।समाज में जाति-धर्म-संस्कृति में संघर्ष होना शुरु हो चुका था।प्रेमचन्द का साहित्य उसी समाज का दर्पण है। परन्तु एक दूरदर्शी साहित्यकार प्रेमचन्द ने समाज का भविष्य भी देखा है।इसलिए आज 2018 ई० की दलितों की स्थिति का चित्रण करने वाला प्रेमचन्द का साहित्य लगभग 100 वर्षों के बाद भी प्रासंगिक है।

वर्तमान समाज में दलितों की स्थिति दलित-चितक चंद्रभान प्रसाद के आलेख से,जिसमें कहा गया है कि "मालवा, मध्यप्रदेश दलित बस्ती में सवर्णो ने कुएँ में किरोसिन तेल डाल दिया क्योंकि दलित परिवार ने बेटी की शादी में बैन्ड बाजा बजवाया था। सहारणपुर के धड़कौली गाँव में दलित बस्ती से सटे'द ग्रेट चमार'बोर्ड पर सवर्ण अभी तक तीन हमले कर चुके हैं। दलितों पर तरह-तरह के हमले हो रहे हैं। निजामपुर का दलित दुल्हा गदहे पर ही स्वीकार्य है।अपनी कमाई की घोड़बग्गी पर नहीं।"(16) आज दलितों-पिछड़ों की ऐसी स्थिति कहीं- कहीं है। बड़ी संख्या मेंआज दलित वर्ग के लोग भी समाज की मुख्यधारा से जुड़ चुके हैं।आज ठाकुर के कुएँ या साहू के कुएँ के भरोसे जोखू और गंगी नहीं हैं।सरकारी सहायता मिलने से इनकी सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक क्षेत्रों में विकास हुआ है।कितने जोखू और कितनी गंगी आज पंचायत चुनाव जीतने के बाद मुखिया सरपंच वार्ड पार्षद हैं। पिछडे इलाके में भी प्रेमचन्द के समय की स्थिति नही है।

*****